Date - 6-5-2020 Dr. [illegible] Kumar
Deptt. of psy
R.N.C. Pandaul.

(1)

BA part I psy(H)

Q) संवेग के हाइपोथैलेमस सिद्धांत के मुख्य बिंदुओं का उल्लेख करें।

Ans) संवेग के क्षेत्र में कैनन ने बार्ड के साथ अनेक अध्ययन किये हैं। कैनन और बार्ड दोनों ने मिलकर एक प्रयोग किया जिसे इस प्रयोग का नाम कैनन-बार्ड सिद्धांत कहा गया है। उस सिद्धान्त को हाइपोथैलेमस सिद्धांत या आपातकालीन सिद्धांत और थैलेमस सिद्धांत भी कहे जाते हैं। संवेग में थैलेमिक कॉर्टेक्स के अतिरिक्त हाइपोथैलेमस का भी महत्वपूर्ण स्थान है। कैनन-बार्ड के अनुसार उत्तेजक परिस्थिति की सूचना ज्ञान इन्द्रियों द्वारा ग्रहण किए जाने के बाद संवेदी नाड़ियों द्वारा हाइपोथैलेमस में होती हुई कॉर्टेक्स में जाती है। हाइपोथैलेमस आन्तरिक अंगों और मस्तिष्क मांसपेशियों को परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है। कॉर्टेक्स में संवेगात्मक अनुभूति और शारीरिक परिवर्तन भी साथ-साथ होता है। कैनन-बार्ड का यह मत है कि सिर्फ और केवल कॉर्टेक्स संवेगात्मक चेतना और अनुभूति से संबंधित है तथा थैलेमस और हाइपोथैलेमस संवेगों कि

अनिश्चितता से सम्बन्धित है। कीन्स और बाद ने अपने प्रमुख सिद्धांत में अपेक्षाओं और अनिश्चितता को महत्व दिया है, जबकि नव-क्लासिकी अपने इस सिद्धांत में इस महत्व का संकेत तक नहीं किया है। उसने केवल कुछ मान्यताओं की सहायता से अपने सिद्धांत को दिखाया है। कीन्स बाद के अनुसार संस्थागत अनुभूति और गतिशील परिवर्तनों को प्रस्तुत हो सकता है। कीन्स बाद के सिद्धांत को आलोचनात्मक सिद्धांत भी कहा जाता है क्योंकि ये उत्पन्न गतिशील विभिन्न स्थितियों को आलोचनात्मक परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार करता है। कीन्स बाद के सिद्धांत में संशोधन की त्रुटियों का वर्णन किया है और यह भी कह सकते हैं कि कीन्स-बाद सिद्धांत ही बिल्कुल सही है।

(1) गुण दोष: यह सिद्धांत आर्थिक अवधि में होने वाले परिवर्तन तथा उत्पत्ति में होने वाले संरचनात्मक अनुभव को ठीक मानते हैं, अलग मानते हैं। दोनों के संरचनात्मक अनुभव सही रहते हैं परन्तु दोनों में कुछ त्रुटियां भी हैं

एक – दूसरे को प्रेरित करते है।

(2) कैनन सिद्धांत में संवेगात्मक अनुभूति को आंतरिक परिवर्तनों पर आधारित नहीं मानता है, अर्थात् आंतरिक परिवर्तनों की अनुपस्थिति में संवेगात्मक अनुभव नहीं भी हो सकता है।

(3) इस सिद्धांत में एक गुण यह भी है कि उस बात की व्याख्या करने में सफल प्रतीत होता है जिस परिवर्तन में शारीरिक परिवर्तन समान रहने पर भी संवेगात्मक अनुभूति भिन्न : भिन्न होती है।

(4) मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि संवेगात्मक उत्तेजना के प्रत्यक्षीकरण के एक सेकण्ड बाद आंतरिक परिवर्तन होते है।

(5) उत्तेजन सिद्धांत तथा शारीरिक विधि के अध्ययनों से भी प्रमाणित होता है कि संवेगात्मक अनुभूति की उत्पत्ति में लिम्बिक सिस्टम और खासकर हाइपोथैलमस का होता है।

दोष —

(1) इस सिद्धांत के पक्ष में किये गए समस्त प्रयोग पशुओं पर हैं अतः मनुष्यों के लिए यह निष्कर्ष सही है या नहीं

(2) थैलमस और हाइपोथैलमस को कृत्रिम रूप से उत्तेजित करके देखा गया है कि उस प्रकार से कृत्रिम लोग और क्रोध थोड़ी देर के लिए संवेग उत्पन्न होते है। इसी प्रकार हम यह कह सकते है कि थैलमस और हाइपोथैलमस के अतिरिक्त मस्तिष्क के अन्य केन्द्रों का भी महत्व है।